केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगायें।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
ASHIMA SHARMA (U.M.S.) V.I.D. - 000742 Govt. H S.S. SINGHPUR BAD	RAS... JAT (U.M.S.) G.H.S.S. MURACHH V.No.- 000864

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

1)
i) अवधि ।

ii) अखबार की ।

iii) पतंग ।

iv) स्मृति की रेखाएँ ।

v) आलम्बन ।

vi) आनन्द रतन यादव ।

2)
i) सत्य ।

ii) सत्य ।

iii) असत्य ।

iv) सत्य ।

असत्य ।

सत्य ।

जिठौत - जेठ का पुत्र ।

बिम्ब - शब्द चित्र ।

जूझ - केशव प्रथम वीर ।

अतीत में दबे पाँव - यात्रा वृत्तांत ।

फ्रीलांसर पत्रकार - अलग-अलग अखबारों में लेखन ।

समाचार लेखन की शैली - उल्टा पिरामिड ।

कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स - धार्मिक अनुष्ठान का स्थान ।

समाच्चार लिखते समय छः प्रश्न पुछे जाते हैं।
→ कब, कौन, कहाँ, कैसे, क्या, क्यों।
समाच्चार लेखन के निम्न प्रकार होते हैं → संपादकीय, से रिपोर्ट, इंटरनेट पत्रकारिता, फीचर, आदि।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

i) निबंध, उपन्यास, जीवनी, एकांकी ।

ii) दूसरे तार स्पतक ।

iii) सिंधु घाटी सभ्यता की ईंट की बनावट का अनुपात 1X2X५ था।

iv) किसी वाक्य या काव्य का अर्थ के ~~बो~~ बारे में बोध ~~का~~ कराने वाले ~~व्याप~~ व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं।

vi) काम होने के साथ-साथ अत्यधिक लाभ होना।

vii) ~~मा~~ मतयंगत सवैया।

निशा निमंत्रण ।

कैमरे में बंद अपाहिज ।

आठ ।

भी ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न

नीले शंख जैसा।

संस्मरण।

6 जैनेंद्र कुमार के अनुसार, बाजार का जादू लोगों को अपनी चका-चौंध और चमक दिखा के मोह लेता है और अनावश्यक चीजें चीजों को अवश्यक समझ कर उसको खरीदने पर मजबूर करदेता है।

संस्मरण	रेखाचित्र
संस्मरण अपने पिछले अनुभवों को याद करके लिखी जाती है।	रेखाचित्र में किसी कहानी का चित्रण अपने शब्दों में किया जाता है।
संस्मरण में किसी वस्तु या पात्र का सटीक चित्रण नहीं होता।	रेखाचित्र में किसी वस्तु या पात्र का सटीक चित्रण किया जाता है।

सिल्वर वैडिंग के आधार पर यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।-
धार्मिक - यशोधर बाबू धार्मिक थे, वे पूजा-पाठ किया करते थे और रोज़ बिड़ला मंदिर जाया करते थे।
भारतीय संस्कृति में विश्वास - यशोधर बाबू का विश्वास भारतीय संस्कृति में था और पश्चिम के तिथि त्योहर तथा मान्यताओं को वे नहीं मानते थे।

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 6 क अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

9 जिस काव्य या वाक्य को पढ़कर पाठक को बिना कोई विरोध किये किसी विरोध का आभास होता है, तो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार विद्यमान होता है।
उदाहरण → वह मुख की मधुराई कहा कहौं, मीठी लागे अखियन लुनाई॥

10. रुबाईयाँ छंद उर्दू शब्दावली का छंद है, जिसमें प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ चरण सम तुकांत होता है, और तीसरा चरण भिन्न तुकांत होता है।
उदाहरण –
जितनी दिल की गहराई हो, उतना गहरा है प्याला,
जितनी मन की मादकता हो, उतनी मादक है हाला,
जितनी ~~उर~~ जो हो ~~रसी~~ भावुकता, उतनी प्यारी साकी है,
जितना हो जो रसिक उसे है उतनी रसमय मधुशाला॥

11)

वह भोजन करता है और विद्यालय जाता है।

गणित का प्रश्नपत्र सरल नहीं है।

जब किसी खबर या अन्य जानकारियों को फोन, कंप्यूटर या अन्य किसी ऑनलाइन माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाता है, उसे इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

13.

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
i) राष्ट्रभाषा का बोले जाने वाला क्षेत्र बड़ा होता है।	राजभाषा सीमित क्षेत्रों में ही बोली जाती है।
ii) राष्ट्रभाषा को 'संपर्क भाषा' भी कहा जाता है, और यह दूसरे देशों से संपर्क करने में प्रयोग होती है।	राजभाषा को 'ऑफिशियल लैंग्वेज' कहा जाता है और यह सरकारी काम-काज के क्षेत्रों में उपियोग होती है।

'छोटा मेरा खेत' कविता में के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ विचार या कल्पना से है जो कवि किसी विषय-वस्तु के बारे में कर रहा है और 'बीज' का अर्थ उसी विषय-वस्तु से है, जिसके बारे में कवि कल्पना कर रहा है।

15. रीतिकालीन कविताओं की दो विशेषता निम्नलिखित हैं -

~~शृंगार~~

i) शृंगार रस की प्रधानता - रीतिकाल की कविताओं में शृंगार रस की प्रधानता देखने को मिलती है।

ii) लक्षण ग्रंथों की रचना - इस काल में लक्षण ग्रंथों की रचना की गई है।

iii) भक्ति भावना - कविताओं में भक्ति भावना देखनें को मिलती है लेकिन यह भक्ति भक्तिकाल की तरह ~~श्रे~~ श्रेष्ठ नहीं है।

रीतिकाल के दो रचनाकारों के नाम -

i) केशवदास → रामचंद्रिका ii) बिहारीलाल → बिहारी सतसई

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न

धर्मवीर भारती

रचनाएँ – सूरज का सातवा घोड़ा, अंधायुग, ठंडा लोहा।

भाषा शैली – धर्मवीर भारती नें अपनी रचनाओं में से समाज को जागृत करनें का कार्य किया है। इनकी भाषा सरल, सटीक, सहज और शुद्ध है। इन्होनें अपनी रचनाओं में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में हमें मुहावरे भी देखनें को मिलजाते हैं।

साहित्य में स्था स्थान – धर्मवीर भारती अपनें समय के प्रमुख कवि थे। इनके कार्यों को आज भी पसंद किया जाता है। इन्होनें अपनें + अपनी रचनाओं से समाज को का चित्रण किया है और लोगों को चेतना प्रदान की है। हिंदी साहित्य में इन्हें इन्हें हमेशा याद रखा जाएगा।

17. पिता जी एंव पुत्र के बीच संवाद निम्नलिखित है –

पुत्र – प्रणाम पिता श्री, चरणस्पर्श।
पिता जी – आनंदमय रहो पुत्र। सुना की तुम्हारी वार्षिक परीक्षा की दिनांक आ गई है।
पुत्र – जी पिता श्री, इस माह की पच्चीस तारीख से मेरी वार्षिक परीक्षा आरंभ हो जाएगी।

पिता जी – ये तो बहुत अच्छी बात है पुत्र। तुम्हारी तैयारी कैसी चल रही है?

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

पुत्र - मेरी तैयारी अच्छी चल रही है पिता श्री, मैं रि... त कर रहा हूँ।

पिता जी - शाब्बाश। मेरे बच्चे, मुझे उम्मीद है की हर बार की तरह इस बार भी तुम उत्तीर्ण अंक से सफल हो जाओगे।

पुत्र - अवश्य पिता जी, मैं जरूर प्रयत्न करूँगा की आपका और माँ का नाम वापस रोशन करू। मुझे आशीर्वा दीजिएगा।

...ता जी - मेरा आशीर्वाद तो सदैव तुम्हारे साथ ही है, पुत्र. सदैव सुखी रहो।

मानव श्रम - ईश्वर की अनोखी रचना।

i. विधाता की अनुपम रचना मनुष्य और उसके शरीर को कहा गया है।

ii. इस दुर्लभ तन को आलस्य, प्रमाद अथवा घटिया कामों में गँवा देने को विधाता के प्रति अन्याय कहा गया है।

19. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

i) रचनाएँ - अनामिका, परिमल, गीतिका।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

ii) भावपक्ष - कलापक्ष - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी प्रकृति के अनोखे कवि हैं और इन्होंने अपने ~~समा~~ समकालीन समाज का चित्रण किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं से मानव को जागृत करने का कार्य किया है। निराला जी ने अपनी कविताओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। इन्होंने अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया है जिसमें तत्सम, तद्भव, उर्दू के शब्द विद्यमान हैं। इनकी कविताओं में हमें अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकार देखने को मिलते हैं।

B
S iii) साहित्य में स्थान - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं। इनकी कविताओं में हमें प्रकृति का चित्रण देखने को मिलता है। इनकी कविताओं को चाहने वाले आज भी बहुत अधिक मात्रा में हैं। इनका नाम हिंदी साहित्य के जगत में हमेशा याद किया जाएगा।
E

20. संदर्भ - प्रस्तुत ~~कविता~~ पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह - भाग-2' ~~से ली~~ की कहानी 'पहलवान की ढोलक' से ली गई है। इसके रचयिता 'फणीश्वर नाथ रेणु' हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने गाँव में फैली महामारी को ललकारती ढोलक के बारे में बताया है।

~~भा~~ व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है की गाँव में महामारी के वक्त सभी लोग डरे सहमे रहते थे। और अपनी अंतिम सांसे गिन रहे होते थे।

प्रश्न क्र.

बीमार होजाने से अधिक बीमर होने का भय लोगों को भयभीत करता था। पूरे गाँव में रात्रि के वक्त सन्नाटा छा जाता था। उस समय पहलवान की ढोलक लोगों के दिलो में ~~म~~ एक आस जगा के रखती थी और उनको ढाढस ~~ब~~ बाँधती और हिम्मत देती थी। ढोलक की आवाज सुनते ही गाँव के बूढ़े-बच्चों के आगे दंगल का दृश्य आजाता था और उनके अंदर जोश एवं होसला होजाता था। मरते हुए व्यक्ति को अब मौत से डर नहीं लग रहा था।

विशेष –
→ गाँव मे फैली महामारी का सजीव एवं सटीक चित्रण।
→ पहलवान की ~~म~~ ढोलक के महामारी को ललकारने का चित्रण। ~~[illegible]~~

21 परीक्षा भवन,
शांति निकेतन, (म.प्र.)
दिनांक – 25/02/25.

प्रिय मित्र,
सप्रेम नमस्कार,

आशा करता हूँ की तुम कुशल से होगे। सुनने मे आया है की तुमने वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। और मैं तुम्हें इसके लिए बधाई देता हूँ। मैं जल्द ही तुमसे मिलने आऊँगा। चाचा और चाची को मेरा नमस्कार कहना और छोटी को मेरा प्यार।

तुम्हारा मित्र
अ.ब.स.

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL...

प्रश्न क्र.

22.

जल संरक्षण

i) प्रस्तावना
ii) जल प्रदूषण
iii) जल प्रदूषण के केंद्र
iv) मनुष्यों की आवश्यकता
v) जल संरक्षण
vi) जल संरक्षण के तरीके
vii) अवसद उपसंहार

B S E

i) प्रस्तावना - जल पृथ्वी में जीवन मे बरकरार रखने के लिए जल सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण वस्तु में जल है, जिसे ईश्वर ने इंसान जगत को प्रदान किया। लेकिन जल के उपयोग के साथ जल का संरक्षण भी जरुरी है। इसे प्रदूषित न होने देना हमारी जिम्मेदारी है।

ii) जल प्रदूषण - वर्तमान समय मे जल का उपयोग और मानव जनसंख्या इतनी अधिक होगई है की जल के सभी स्रोत जैसे, नदी, तलाब, झीलें सब प्रदूषित हो चुके हैं। और यह प्रदूषित जल इंसानो एवं जानवरों के लिए हानिकारक है और इससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं। कई प्रकार की बिमारियाँ आज कई देशों के गरीब बच्चों को अपना शिकार बना रही हैं। और यह प्रदूषित जल जानवरों की मृत्यु का भी कारण बन रहा है।

मध्यप्रदेश
EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

iii) जल प्रदूषण के केंद्र - अब हमारे मन में सवाल यह आता है की जल को प्रदूषित कौन कर है? या जल के प्रदूषित होने के पीछे क्या कारण हैं? इसका जवाब यह है की जल के प्रदूषित होने के पीछे कोई एक कारण नहीं है, अपितु अनेक कारणों के की वजह से आज जल पीने योग्य नहीं बच रहा है। वे कारण हैं - बड़ी-बड़ी फैक्टरी, घरों का गंदा पानी नदियों में जाना, खेतों में डलने वाली खाद का ग्राउंड वाटर को प्रदूषित करना, लोगों के द्वारा कचड़ा नदी, नालियों तथा नहरों में फेकना आदि कारणों की वजह से पानी प्रदूषित हो रहा है और पीने योग्य नहीं बच रहा है।

B
S
E

iv) मनुष्यों की आवश्यकता - जल ही जीवन है कथन बिलकुल सही दिया गया है। जल के कारण ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। मनुष्य की प्रथम आवश्यकताओं वाली चीजों में जल प्रमुख स्थान पर आता है। और यह बेहद ज़रुरी है की यह जल पीने योग्य बना रहे नहीं तो मनुष्य का जीवन रहने योग्य नहीं बचेगा। हमें जल्द से जल्द जल संरक्षणों की विधियों पर काम शुरु करदेना चाहिए और पृथ्वी, और यहां के निवासियों को विलुप्त होने से बचाना चाहिए।

v) जल संरक्षण - जल संरक्षण आज की आवश्यक ज़रुरत बन गया है तभी हम इस जीवन को सदैव जीने योग्य रख सकते हैं। जल संरक्षण का अर्थ है, अलग-अलग माध्यमों द्वारा जल को प्रदूषित होने से रोकना, प्रदूषित जल को साफ करना और सभी लोगों को इसके प्रति जागरुक करना की जल को अब और प्रदूषित ना किया जाए।

प्रश्न क्र.

जल संरक्षण के तरीके - जल संरक्षण करने के अनेक तरीके हैं, जैसे - सरकार की मदद लेकर सभी को जागरूक करना।
गंदे जल की साफ-सफाई अभियानों में जुड़ना।
बड़ी-बड़ी फैक्टरियों में पानी को और प्रदूषित करने पर रोक लगाना।
खेतों मे 'ऑरगैनिक खाद' का उपयोग करना।
अपने घर की नालियों को नदी नदियों में निकासित न करना।

उपसंहार - जल संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है। और हम सबको मिलकर जल्दी से जल्दी एक साथ इस काम पर जुटना होगा। अतः यह पृथ्वी तो रहेगी लेकिन इसे बर्बाद करने वाले (मनुष्य) खुद बर्बाद हो जाएंगे। जय हिंद।

23. संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह-भाग 2' में संकलित पाठ 'कवितावली' से ली गई हैं। इसके रचयिता 'गोस्वामी तुलसीदास' जी हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बता रहे हैं की कैसे समाज उन्हें स्वीकार नहीं करना चाह रहा और वे उसका क्या उत्तर देते हैं।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियों में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं की समाज भले चाहे उन्हें धूत कहे या अवधूत कहे या अन्य कोई जाति जैसे राजपूत या जुलाहा कहे, उन्हें को फर्क नहीं पड़ता। वे कहते हैं की उन्हें की बेटी से अपना बेटा ब्याह

प्रश्न क्र.

के किसी की जात नहीं बिगाड़नी है। तुलसी तो सदैव 'दास' रहेंगें अर्थात तुलसीदास सदैव राम के दास रहेंगे और उन्हीं की भक्ति में लीन रहेंगे। वे न तो किसी ~~से माँग~~ के यहाँ के खायेंगे, नाही किसी के यहाँ सोऐंगें। वे माँग के अपना पेट भर लेंगें और ~~मस्द~~ मस्जिद में सो लेंगे। उनको न किसी से एक रुपय लेना है नही किसी को दो रुपय देना है।

विशेष → तुलसीदास जी नें अपने उपर उठ रहे ~~सवा~~ सवालों के उत्तर देये हैं।
→ तुलसीदास की राम के प्रति अंडनिष्ठ भक्ति देखने को मिलती है।
→ 'कहीं केऊ कोऊ' में अनुप्रास अलंकार है।

X